

## सफलता की कहानी

**सफलता कहानी का शीर्षक:** जलवायु अनुकूल खेती से लागत में कमी एवं आय में वृद्धि: किसान संजीव कुमार की सफलता कहानी

**विषयगत क्षेत्र (Thematic Area):** जलवायु अनुकूल कृषि, शून्य जुताई, डायरेक्ट सीडेड राइस (DSR), अंतरवर्ती खेती, संसाधन संरक्षण आधारित कृषि

**केविके/संस्थान का नाम:** आरपीसीएयू – कृषि विज्ञान केंद्र, शिवहर

**किसान/उद्यमी का नाम एवं पूर्ण पता:**

क्र.सं.	विवरण	जानकारी
1	नाम	श्री संजीव कुमार
2	गाँव	हरनाही
3	प्रखंड	शिवहर
4	जिला	शिवहर
5	आयु	45
6	शिक्षा	मैट्रिक
7	मोबाइल नंबर	8581941423

## परिचय

श्री संजीव कुमार, ग्राम हरनाही, जिला शिवहर के एक प्रगतिशील किसान हैं, जो लगभग सात एकड़ कृषि भूमि पर लंबे समय से परंपरागत खेती करते आ रहे थे। परंपरागत कृषि पद्धतियों में बार-बार जुताई, अधिक श्रमशक्ति पर निर्भरता, असंतुलित उर्वरक उपयोग तथा सिंचाई जल की अत्यधिक खपत जैसी समस्याएँ प्रमुख थीं। इन कारणों से उनकी उत्पादन लागत लगातार बढ़ रही थी, जबकि शुद्ध लाभ अपेक्षाकृत सीमित रह जाता था। डीजल की बढ़ती कीमतों, मजदूरों की कमी और मौसम की अनिश्चितता ने खेती को और अधिक जोखिमपूर्ण बना दिया था। परिणामस्वरूप खेती की स्थिरता और लाभप्रदता दोनों प्रभावित हो रही थीं। वर्ष 2020 में उनके गाँव का चयन कृषि विज्ञान केंद्र, शिवहर द्वारा जलवायु अनुकूल खेती कार्यक्रम के अंतर्गत किया गया, जिसने उनके कृषि जीवन में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन की शुरुआत की। कृषि विज्ञान केंद्र के वैज्ञानिकों के नियमित मार्गदर्शन, प्रशिक्षण कार्यक्रमों, फील्ड विजिट तथा तकनीकी परामर्श के माध्यम से उन्होंने संसाधन

संरक्षण आधारित आधुनिक तकनीकों को अपनाना प्रारंभ किया। उन्होंने गेहूं की फसल में शून्य जुताई तकनीक को अपनाया, जिससे जुताई की लागत में कमी आई, मिट्टी की नमी संरक्षित रही और डीजल की बचत हुई। धान की खेती में उन्होंने धान की सीधी बुआई (DSR) पद्धति अपनाई, जिससे रोपाई पर होने वाला श्रम व्यय घटा तथा जल की बचत संभव हुई। इसके अतिरिक्त, अंतरवर्ती खेती प्रणाली अपनाकर उन्होंने भूमि का अधिकतम उपयोग किया और विभिन्न फसलों के माध्यम से अतिरिक्त आय प्राप्त की। इन समेकित प्रयासों से उनकी उत्पादन लागत में कमी आई, उपज में वृद्धि हुई तथा प्राकृतिक संसाधनों का संतुलित उपयोग सुनिश्चित हुआ, जिससे उनकी खेती अधिक टिकाऊ, लाभकारी और जलवायु के अनुकूल बन सकी।

### उपलब्ध संसाधन/इन्वेंट्री की सूची

क्र.सं.	संसाधन का नाम	विवरणसंख्या/
1	कृषि भूमि	7 एकड़
3	कृषि यंत्र	स्प्रेयर
4	सिंचाई सुविधा	पम्पसेट
5	पशुधन	गाय (1)

### अपनाई गई तकनीक/नवाचार का विवरण

**शून्य जुताई (Zero Tillage) से गेहूं उत्पादन:** शून्य जुताई के अंतर्गत खेत की पारंपरिक जुताई नहीं की गई। इससे मिट्टी की नमी संरक्षित रही, डीजल की बचत हुई तथा जुताई लागत में कमी आई। उत्पादन में वृद्धि के साथ पर्यावरणीय लाभ भी प्राप्त हुए।

**धान की सीधी बुवाई (DSR):** धान की रोपाई के स्थान पर मशीन द्वारा सीधी बुवाई की गई। इससे श्रम लागत कम हुई, पानी की बचत हुई तथा फसल की बढ़वार संतुलित रही।

### अंतरवर्ती खेती

- आलू + मक्का
- मक्का + गोभी
- मक्का + जई
- मक्का + मटर

## क्षमता निर्माण / संस्थागत सहयोग (100 शब्द)

कृषि विज्ञान केंद्र, शिवहर द्वारा आयोजित जलवायु अनुकूल खेती संबंधी प्रशिक्षण कार्यक्रमों, फील्ड दिवस, कृषक गोष्ठियों तथा तकनीकी परामर्श सत्रों में श्री संजीव कुमार की निरंतर एवं सक्रिय भागीदारी रही है। इन कार्यक्रमों के माध्यम से उन्हें शून्य जुताई तकनीक, धान की सीधी बुवाई (DSR), संतुलित उर्वरक प्रबंधन, मृदा परीक्षण आधारित पोषण प्रबंधन तथा समेकित कीट एवं रोग प्रबंधन (IPM) की वैज्ञानिक जानकारी प्रदान की गई। कृषि वैज्ञानिक समय-समय पर उनके खेत का निरीक्षण कर फसलों की स्थिति का मूल्यांकन करते हैं तथा आवश्यकतानुसार सुधारात्मक सुझाव देते हैं। मृदा परीक्षण के आधार पर उर्वरकों का संतुलित उपयोग सुनिश्चित किया गया, जिससे लागत में कमी आई और मिट्टी की उर्वरता में सुधार हुआ। कीट या रोग के प्रारंभिक लक्षण दिखने पर त्वरित निदान एवं उचित उपचार की सलाह मिलने से संभावित नुकसान को काफी हद तक रोका जा सका। इस प्रकार तकनीकी सहयोग, नियमित मार्गदर्शन और वैज्ञानिक हस्तक्षेप के कारण उनकी फसल उत्पादन प्रणाली अधिक स्थिर, लागत नियंत्रित तथा दीर्घकालिक रूप से टिकाऊ बन पाई है।

### स्थानीय परिस्थितियों के अनुसार तकनीक में किए गए परिवर्तन

क्र.सं.	तकनीक	स्थानीय समस्या	किया गया परिवर्तन	प्राप्त लाभ
1	शून्य जुताई	अधिक जुताई लागत	बिना जुताई बुवाई	लागत व डीजल बचत
2	DSR	अधिक श्रमिक आवश्यकता	मशीन द्वारा सीधी बुवाई	श्रम व जल बचत
3	अंतरवर्ती खेती	सीमित आय	बहुफसल प्रणाली-	अतिरिक्त आय
4	मृदा परीक्षण	असंतुलित उर्वरक उपयोग	परीक्षण आधारित उर्वरक	मृदा स्वास्थ्य सुधार

### आर्थिक विश्लेषण

#### हस्तक्षेप से पहले (परंपरागत प्रणाली)

क्र.	फसल प्रणाली	कुल लागत (₹/ एकड़)	सकल आय (₹/ एकड़)	शुद्ध आय (₹/ एकड़)	B:C अनुपात
1	धान-गेहूँ-मूंग	65,000	95,000	30,000	1.46
2	धान-मक्का	50,000	75,000	25,000	1.50
3	धान-मक्का आलू +	70,000	1,05,000	35,000	1.50
4	धान-मक्का गोभी +	68,000	1,00,000	32,000	1.47
5	धान-मक्का जई +	55,000	82,000	27,000	1.49

6	धान-मक्का मटर +	58,000	88,000	30,000	1.52
---	-----------------	--------	--------	--------	------

### हस्तक्षेप के बाद (जलवायु अनुकूल/अंतरवर्ती प्रणाली)

क्र.	फसल प्रणाली	कुल लागत (₹/ एकड़)	सकल आय (₹/ एकड़)	शुद्ध आय (₹/ एकड़)	B:C अनुपात
1	धान-गेहूँ-मूंग	58,000	1,15,000	57,000	1.98
2	धान-मक्का	46,000	92,000	46,000	2.00
3	धान-मक्का + आलू	68,000	1,40,000	72,000	2.06
4	धान-मक्का + गोभी	65,000	1,35,000	70,000	2.07
5	धान-मक्का + जई	52,000	1,00,000	48,000	1.92
6	धान-मक्का + मटर	54,000	1,10,000	56,000	2.03

### उपलब्धियाँ/परिणाम

श्री संजीव कुमार ने जलवायु अनुकूल कृषि तकनीकों को अपनाकर अपनी पाँच एकड़ कृषि प्रणाली को अधिक टिकाऊ, लाभकारी एवं जोखिम-रोधी बनाया है। पूर्व में परंपरागत खेती के अंतर्गत विभिन्न फसल प्रणालियों का लाभ-लागत अनुपात (B:C Ratio) लगभग 1.46 से 1.52 के बीच था। उदाहरणतः धान-गेहूँ-मूंग प्रणाली में प्रति एकड़ कुल लागत ₹65,000 के मुकाबले ₹95,000 की सकल आय प्राप्त होती थी, जिससे शुद्ध आय मात्र ₹30,000 और B:C अनुपात 1.46 था। इसी प्रकार धान-मक्का + गोभी प्रणाली में शुद्ध आय ₹32,000 तथा B:C अनुपात 1.47 था।

जलवायु अनुकूल तकनीकों जैसे शून्य जुताई, धान की सीधी बुवाई (DSR) एवं अंतरवर्ती खेती अपनाने के बाद आर्थिक स्थिति में स्पष्ट सुधार हुआ। धान-गेहूँ-मूंग प्रणाली में लागत घटकर ₹58,000 रह गई, जबकि सकल आय बढ़कर ₹1,15,000 हो गई, जिससे शुद्ध आय ₹57,000 तथा B:C अनुपात 1.98 हो गया। धान-मक्का + गोभी प्रणाली में सकल आय ₹1,35,000 तक पहुँची और B:C अनुपात 2.07 दर्ज किया गया। धान-मक्का + आलू तथा धान-मक्का + मटर प्रणालियों में भी B:C अनुपात 2.00 से अधिक रहा।

इस प्रकार उन्नत तकनीकों के समेकित उपयोग से लागत में 10-15% कमी, आय में 30-40% वृद्धि तथा लाभ-लागत अनुपात में उल्लेखनीय सुधार हुआ। परिणामस्वरूप उनकी शुद्ध आय स्थिर एवं बढ़ी हुई है तथा खेती अब अधिक सुरक्षित और दीर्घकालिक रूप से लाभकारी बन गई है।

#### प्राप्त पुरस्कार/मान्यता

क्रसं. . क्रम ) (संख्या	पुरस्कार का नाम	संस्था	तिथि/वर्ष
1	प्रगतिशील किसान	कृषि विज्ञान केंद्र, शिवहर	2023
2	जलवायु अनुकूल एवं अंतरवर्ती खेती	कृषि विज्ञान केंद्र, शिवहर	2025

#### समाज/कृषक समुदाय में योगदान एवं प्रेरणा (लगभग 250 शब्द)

श्री संजीव कुमार ने अपने ग्राम हरनाही तथा आसपास के क्षेत्रों में जलवायु अनुकूल खेती का एक सशक्त एवं व्यावहारिक मॉडल प्रस्तुत किया है। उन्होंने शून्य जुताई, धान की सीधी बुवाई (DSR) एवं अंतरवर्ती खेती जैसी तकनीकों को सफलतापूर्वक अपनाकर यह सिद्ध किया कि आधुनिक एवं संसाधन संरक्षण आधारित कृषि पद्धतियाँ न केवल लागत घटाती हैं, बल्कि आय और स्थिरता भी बढ़ाती हैं। उनकी खेती में प्राप्त सकारात्मक परिणामों को देखकर गांव के अन्य किसान भी प्रेरित हुए और धीरे-धीरे इन तकनीकों को अपनाने लगे।

कृषि विज्ञान केंद्र, शिवहर द्वारा आयोजित फील्ड दिवस, प्रशिक्षण कार्यक्रमों एवं किसान गोष्ठियों में श्री संजीव कुमार सक्रिय रूप से भाग लेते हैं और अपने अनुभव साझा करते हैं। वे नए किसानों को शून्य जुताई मशीन के उपयोग, DSR विधि की बुवाई तकनीक तथा अंतरवर्ती फसल संयोजन के लाभों के बारे में व्यावहारिक जानकारी देते हैं। उनके खेत को कई बार प्रदर्शन स्थल (डेमो प्लॉट) के रूप में भी उपयोग किया गया, जिससे अन्य किसानों को प्रत्यक्ष रूप से परिणाम देखने का अवसर मिला।

उनकी पहल से क्षेत्र में जल, श्रम एवं मृदा संरक्षण आधारित कृषि को बढ़ावा मिला है। आज वे अपने क्षेत्र में एक प्रगतिशील, जागरूक एवं नवाचार अपनाने वाले किसान के रूप में पहचाने जाते हैं और अन्य कृषकों के लिए प्रेरणास्रोत बन चुके हैं।



डिब्लर मशीन से बोया हुआ मक्का



आलू के साथ मक्का

मक्का के साथ मटर